DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2

LECTURE-9

leadership(नेतृत्व)

नेतृत्व की परिभाषा एवं उसके कार्य

DEFINITION AND FUNCTION OF LEADERSHIP

नेतृत्व एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है जो मनुष्यों एवं पशुओं दोनों के समान में पाया जाता है |

कुछ समान मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व की परिभाषा इस प्रकार से दी है :-

लिंडग्रेन(1973) के अनुसार ,"समूह के ऐसे सदस्य को नेता कहा जाता है जो अपनी पसंद के अनुसार अन्य सदस्यों को व्यवहार करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालता है |"

लापीयर तथा फ़्रांसवर्थ ने कहा है की “नेतृत्व वह व्यवहार है जो अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को उसमे कहीं अधिक प्रभावित करता है जितना की उन सभी व्यक्तियों का व्यवहार नेता को प्रभावित करता है”

वाँस(1990) के अनुसार “नेतृत्व एक ऐसे समूह के बीच अन्तःक्रिया है जिसमे सदस्यों की प्रत्याशाओ एवं प्रत्यक्षणों तथा परिस्थितियाँ प्रायः संरचित एवं पुन संरचित होती है जिनके कार्य का प्रभाव अन्य सदस्यों पर इन सदस्यों द्वारा किये गये कार्यो का उन पर पड़ने वाले प्रभाव से अधिक होता है |

नेतृत्व की उत्पत्ति तब होती है जब समूह का एक सदस्य अन्य सदस्यों की सामर्थ्यता तथा अभिप्रेरण को परिवर्तित करता है |”

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विमा पर रोशनी पड़ती है और वह यह है की नेतृत्व के दो पक्ष होते है – एक नेता जो नेतृत्व करता है तथा दूसरा जो नेतृत्व को स्वीकार करता है ,अर्थात अनुयायी लोग (FOLLOWERS) नेतृत्व की प्रक्रिया में ये दोनों पक्ष एक दुसरे को प्रभावित करते है |नेता अनुयायी लोगो को प्रभावित करता है तथा अनुयायी लोग भी नेता को प्रभावित करते है | अंतर सिर्फ इतना होता है की नेता पर अनुयायियों के व्यवहारों का प्रभाव जितना पड़ता है उससे कही अधिक अनुयायियों पर नेता के व्यवहारों का पड़ता है|इसका मतलब यह हुआ की नेता तथा अनुयायियों के बीच एकतरफा सम्बन्ध ना होकर दोतरफा सम्बन्ध होता है और इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अंतर होता है |

नेतृत्व के अर्थ एवं स्वरूप की व्याख्या तबतक पूरी नहीं होती है जबतक की नेता तथा औपचारिक अध्यक्ष के अंतर को ना दर्शाया जाय |

इसपर गिव (1969)ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है की नेता को अपने अनुयायियों द्वारा स्वतः ही प्रभाव दिखलाने का अधिकार मिल जाता है | जबकि एक औपचारिक अध्यक्ष को दुसरो पर प्रभाव दिखलाने का अधिकार स्वतः न होकर अपने औपचारिक पद के कारण होता है जैसे एक कुलपति का प्रभाव विश्वविद्यालय के शिक्षको कर्मचारियों एवं छात्रो पर उनके पद के कारण होता है |कभी - कभी यह निश्चित करना कठिन हो जाता है की समूह या संगठन के अन्य सदस्य एक अच्छा नेता समझ कर उनका अनुसरण करते है या उनके पद की मर्यादा को ध्यान में रखकर वैसा करते है |

निष्कर्ष यह है की नेतृत्व एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे अंतर्वैयक्तिक अन्तः क्रिया होती है क्योकि नेता अपने अनुयायियों पर प्रभाव डालता है ,तथा अनुयायी अपने नेता पर प्रभाव डालते है |

नेता के कार्य (FUNCTION OF LEADER)

एक नेता अपने समूह के नेतृत्व के लिए भिन्न भिन्न तरह के कार्य करता है |किसी समूह विशेष में नेता के कितने कार्य होंगे यह मूलतः इस बात पर निर्भर करता है की समूह के सामने कौन कौन सी मुख्य समस्याए है जिनका समाधान वह करना चाहता है |फिर भी सामान्य तौर पर एक नेता को कुछ ख़ास ख़ास कार्य निश्चित रूप से करना होता है चाहे समूह का स्वरूप जैसा भी हो |क्रेच ,क्रचफिल्ड तथा

बैलेची (1962) के अनुसार ऐसे प्रमुख्य कार्य को दो भागो में बांटा गया है –प्रधान कार्य तथा सहायक कार्य |

इन दोनों कार्यो का वर्णन निम्नांकित है :-

(1) प्रधान कार्य (PAIMARY FUNCTION)-प्रधान कार्य से तात्पर्य वैसे कार्यो से होता है जिसे उन्हें करना नेता पद पर बने रहने के लिए आवश्यक हो जाता है |

(१)कार्यकारणी के रूप में नेता -कार्यकारणी के रूप में नेता समूह के कार्यकर्मो का संचालन एवं निर्देशन करता है|समूह के सभी क्रियाओं का उसे सर्वोच्च संचालक माना जाता है |वह इन विभिन्न कार्यो का समूह के सदस्यों के बीच उचित बँटवारा भी करता है |

(२)योजना निर्माता के रूप में –नेता का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य समूह के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योजना बनाना होता है |दुसरे शब्दों में नेता समूह के उद्देश्य एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न साधनो एवं तरीको का एक पूर्ण योजना तैयार करता है |लक्ष्य की प्राप्ति के अल्प कालीन एवं दीर्घकालीन दोनों ही तरह की योजनाओंको नेता द्वारा ही बनाया जाता है |

(३)नीति निर्माता के रूप में नेता –नेता समूह के लक्ष्यों एवं नीतियों का निर्माता भी होता है किसी भी समूह में दो तरह की निति हो सकती है,

आन्तरिक निति (INTERNAL POLICY) तथा

वाह्य निति (EXTERNAL POLICY)

(४)विशेषज्ञ के रूप में नेता – नेता समूह सदस्यों के लिए एक विशेषज्ञ के रूप में भी कार्य करता है तथा परामर्श देता है |समूह के सदस्यों में ऐसा विश्वास

होता है की नेता को अपने समूह की समस्याओं के बारे में उच्चतम तकनीकी ज्ञान होगा |यह विश्वास सदस्यों में जितना ही अधिक होता है ,नेता की शक्ति अधिक होती है जिसमे नेता के चारो तरफ शक्ति का ध्रुवीकरण अधिक हो जाता है |इस विश्वास के कारण ही सदस्यगण आवश्यकता पड़ने पर नेता को मार्गदर्शन करने का आग्रह करते है |

(५)बाह्य प्रतिनिधि के रूप में नेता –किसी भी बड़े समूह के सभी सदस्यों के लिए यह संभव नहीं है|सब मिलकर ही पुरे समूह का प्रतिनिधित्व किसी बाह्य समूह के संदर्भ में करे |अतः समूह के बाह्य प्रतिनिधित्व का कार्य भार भी नेता को ही संभालना पड़ता है और अन्य समूह या संगठन उपस्थित होकर अपने सभी सदस्यों के विचारों को एक प्रतिनिधि के रूप में रखता है |इस तरह से नेता अपने समूह का अधिकारिक प्रवक्ता होता है |

(६)आन्तरिक संबंधो के नियंत्रक के रूप में नेता – नेता अपने समूह के सदस्यों के आपसी एवं भीतरी संबंधो को निर्धारित एवं नियंत्रित करता है |उसका हर संभव प्रयास यही होता है की सदस्यों का आपसी सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण बना रहे|

(७)पुरस्कार एवं दंड के प्रबंध के रूप में नेता – नेता अपने समूह के सदस्यों को दंड तथा पुरस्कार भी देता है |जो सदस्य समूह के मानक के अनुकूल व्यवहार करते हुए समूह लक्ष्यों की प्राप्ति में काफी मदद करते है , नेता उन्हें उचित पुरस्कार देता है |दुसरे तरफ जो सदस्य समूह के मानक के प्रतिकूल व्यवहार करते है तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में विघ्न डालते है ,उन्हें नेता उचित दंड भी देता है |

(८)पंच तथा मध्यस्थ के रूप में नेता – ऐसा देखा गया है की कभी-कभी समूह के सदस्यों के बीच आपस में मनमुटाव एवं संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है |ऐसी परिस्थिति में नेता एक पंच तथा मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सदस्यों के बीच आपसी मनमुटाव एवं संघर्ष को दूर करता है | इस समझौता में वह प्रत्येक सम्बंधित सदस्य की बातो को सुनता है तथा उसके बाद एक अपना निर्णय देकर सदस्यों के मनमुटाव को दूर करता है |

(ख)सहायक कार्य (ACCESSORY FUNCTION)-उपर्युक्त प्रधान कार्यो के अलावा नेता अपने समूह के सदस्यों के लिए कुछ सहायक कार्य भी करता है |सहायक कार्य से तात्पर्य वैसे कार्यो से होता है जिसे नेता या तो स्वयं करने को ठान लेता है या समूह सदस्यों के आग्रह पर करने का निश्चय कर लेता है |इन कार्यो का स्वरूप कुछ ऐसा होता है की यदि नेता चाहे तो उसे स्वयं नहीं भी कर सकता है | इसे नहीं करने से भी पद पर से उन्हें कोई हटा नहीं सकता है |

ऐसे प्रमुख सहायक कार्य निम्नांकित है :-

(१)आदर्श के रूप में नेता –नेता समूह के सदस्यों के लिए एक आदर्श या माँडल के रूप में कार्य करता है |व्यवहारों का एक नमूना या उदाहरण देकर नेता अन्य सदस्यों से भी वैसा ही व्यवहार की उम्मीद रखता है |एक राजनीतिक नेता अपने पार्टी के सदस्यों के सामने पार्टी के आदर्श के अनुकूल व्यवहार करने की उम्मीद रखता है |उसी तरह से धार्मिक नेता धर्म के अन्य अनुयायियों के लिए एक उदाहरण के रूप में कार्य करता है |

(२) समूह के प्रतीक के रूप में नेता – अपने समूह के प्रतीक के रूप में कार्य कर समूह में एकता तथा निरंतरता बनाये रखता है | पुरे समूह को उस प्रतीक द्वारा आसानी से जाना जाता है तथा समूह के स्वरूप को समझा भी जाता है|उदाहरणार्थ,श्री राजीव गाँधी को कांग्रेस (ई) पार्टी के प्रतीक के बारे में जाना जा सकता है |

(३) व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के लिए स्थानापन्न के रूप में नेता – नेता कभी – कभी अपने समूह के सदस्यों का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व अपने कंधे पर ले लेता है | विशेषकर संकटकालीन परिस्थिति में जब सदस्यों को व्यक्तिगत रूप में कुछ खतरनाक निर्णय लेना होता है | (जिसे सचमुच में वह नहीं लेना चाहता है) तो इसकी जबाबदेही अपने कंधे पर लेकर नेता उन सदस्यों को चिंता से मुक्त कर देता है|

(४) सिद्धांतवादी के रूप में नेता- समूह के सदस्यों के लिए एक सिद्धांतवादी के रूप में कार्य करता है | वह समूह के सिद्धांतो , मूल्यों , मानको के अनुकूल व्यवहार कर सदस्यों के सामने एक पूर्ण सिद्दांत के रूप में पेश आता है | नेता जब एक सिद्धांतवादी के रूप में अपने समूह के सदस्यों के सामने पेश आता है तो उसके पीछे एक खास उद्देश्य भी होता है और वह यह होता है की समूह के अन्य सदस्य भी सिद्धांतो के अनुकूल ही व्यवहार करे |

(५) पिता तुल्य के रूप में नेता – संवेगात्मक भूमिका के खयाल से जो स्थान पिता का अपने परिवार में होता है ,करीब –करीब वही स्थान नेता का अपने समूह में होता है |जिस तरह से परिवार के सदस्य अपने पिता को धनात्मक

सांवेगिक भावो का केन्द्र बिंदु मानकर उसके साथ तादात्म्य स्थपित करते है |नेता अपने सदस्यों को इस कार्य में विशेष रूप में मदद करता है |

(६)बलि के बकरा के रूप में नेता –जब कभी भी समूह लक्ष्य की प्राप्ति नही हो पाती है ,तो वैसी परिस्थिति में सदस्यों में निराशा उत्पन्न होती है और सदस्य नेता के प्रति आक्रोश दिखलाना प्रारंभ कर देते है |प्राय: सदस्य इसका सारा दोष नेता पर मढ़ देता है जिसका परिणाम यह होता है की नेता को या तो अपने पद से हटा दिया जाता है या उसकी हत्या कर दी जाती है |इस तरह से नेता को कभी कभी बलि की सूली पर भी चढ़ जाना पड़ता है |भारतीय समाज में महात्मा गाँधी ,इंद्रा गाँधी एवं राजीव गाँधी कि हत्या नेता के इस विशेष कार्य का एक सबसे अच्छा उदाहरण है |ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट है की एक नेता को अपने समूह में तरह तरह का कार्य करना पड़ता है |एक प्रभावकारी नेता होने के लिए यह आवश्यक है की वह उन कार्यो की सूचि में से अधिकतम कार्य सफलतापूर्वक करे |